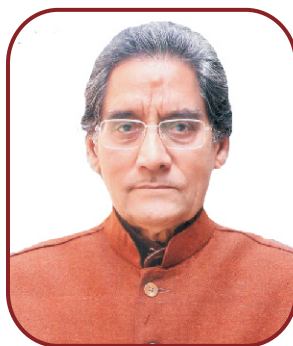


Padma Shri



PANDIT RAM DAYAL SHARMA

Pandit Ram Dayal Sharma, is a living legend of Nautanki, Swang, Bhagat, Raasleela, and Rasiya forms. He has devoted his life to promote our traditional musical theatre traditions and utilizing them for raising awareness about important social issues and promoting national development. He has performed more than 5000 shows till now. He belongs to a long lineage of musical masters and is the present guru of Samai-Khera gharana.

2. Born on 2nd May, 1946 in village Samai Khera, Bharatpur, Rajasthan, Pandit Sharma's childhood was spent in extreme poverty. He had to walk barefoot for 12 km, to the nearby town to attend school. However, because of his outstanding singing abilities, he was recognized as a prodigy and won numerous awards. At an early age, he became popular star in his teenage and was conferred with the title of "Braj-Kokila" (the nightingale of Braj) by the masses of Brajbhoomi in the 1960s.

3. Pandit Sharma has worked tirelessly throughout his life to get back the respect for our magnificent musical theatre/opera forms. He has connected our traditional musical theatre to the issues and problems of our times, He was one of the first people to start writing new Nautankis on important issues in post-independence India. These scripts are based on issues like girls' education, women's empowerment, dowry, environment protection, climate change, HIV/AIDS, Covid-19, national development, and tales of unsung freedom fighters. He spearheaded a folk media campaign launched by the Uttar Pradesh Government and trained more than 150 performing troupes in Nautanki, Alha, Birha, Qawaali, Puppetry, and Magic, to give messages of women's empowerment and health. More than 10,000 performances have been done in villages all over Uttar Pradesh since then. In 2007, he worked with United Nations Agency for HIV/AIDS (UNAIDS) to direct a folk media campaign to raise awareness on the issue.

4. Pandit Sharma has provided major contribution in educating our younger generation in our traditional musical theatre forms, by his dedicated teaching at various institutions and universities of national importance such as the National School of Drama (NSD), Indira Gandhi National Center for the Arts, University of Delhi, NCERT, and CCRT, and by conducting workshops all over India.

5. Pandit Sharma has been a recipient of numerous awards and honours. Recognizing his immense work in the field of Nautanki, he was senior Sangeet Natak Akademi award in 2014. His musical composition "Kalpana" was chosen to represent India for the UNICEF Award in Sofia Bulgaria in the early 1980s. He has been honored internationally by being invited to perform and give lectures at the University of California-Berkeley, University of Texas- Austin, California State University, Ohio University, and Counter Pulse, San Francisco, among many others.

पद्म श्री



पंडित रामदयाल शर्मा

पंडित रामदयाल शर्मा, नौटंकी, स्वांग, भगत, रासलीला और रसिया रूपों के एक दिग्गज कलाकार हैं। उन्होंने हमारी पारंपरिक संगीत थिएटर परंपराओं को बढ़ावा देने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है और उनका उपयोग महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों तथा राष्ट्र के विकास के बारे में जागरूकता बढ़ाने में किया है। वह अब तक 5000 से ज्यादा शो कर चुके हैं। वह संगीत विराशदों के वंश से संबंधित हैं और समाई-खेड़ा घराने के वर्तमान गुरु हैं।

2. 2 मई, 1946 को राजस्थान के भरतपुर के ग्राम समाई खेड़ा में पंडित रामदयाल का जन्म हुआ। पंडित रामदयाल का बचपन अत्यधिक गरीबी में बीता। उन्हें स्कूल जाने के लिए पास के शहर तक 12 किमी नंगे पांव चलना पड़ता था। लेकिन, उनकी उत्कृष्ट गायन कौशल के कारण, वह एक विलक्षण व्यक्ति के रूप में पहचाने गये और उन्हें कई पुरस्कार प्राप्त हुए। वह किशोरावस्था में लोकप्रिय हो गए थे और 1960 के दशक में ब्रजभूमि की जनता ने उन्हें "ब्रज-कोकिला" की उपाधि से सम्मानित किया।

3. पंडित रामदयाल ने हमारे शानदार संगीत थिएटर/ओपेरा रूपों के सम्मान को वापस पाने के लिए जीवन भर अथक प्रयास किया है। उन्होंने हमारे पारंपरिक संगीत थिएटर को हमारे समय के मुद्दों और समस्याओं से जोड़ा है। वह स्वतंत्रता के बाद के भारत में महत्वपूर्ण मुद्दों पर नई नौटंकी लिखने वाले अग्रणी लोगों में से एक थे। इनकी कहानियां लड़कियों की शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, दहेज, पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन, एचआईवी/एड्स, कोविड-19, राष्ट्रीय विकास, और गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों की कहानियों जैसे मुद्दों पर आधारित हैं। उन्होंने उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा शुरू किए गए एक लोक मीडिया अभियान का नेतृत्व किया तथा महिला सशक्तिकरण और स्वास्थ्य का संदेश देने के लिए नौटंकी, आल्हा, बिरहा, कव्वाली, कठपुतली और जादू में 150 से अधिक प्रदर्शन मंडलियों को प्रशिक्षण प्रदान किया। तब से अब तक पूरे उत्तर प्रदेश के गांवों में 10,000 से अधिक प्रदर्शन किए जा चुके हैं। 2007 में, उन्होंने इस मुद्दे पर जागरूकता बढ़ाने के लिए एक लोक मीडिया अभियान को निर्देशित करने के लिए एचआईवी/एड्स के लिए संयुक्त राष्ट्र एजेंसी (यूएनएड्स) के साथ काम किया।

4. पंडित रामदयाल ने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एनएसडी), इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, दिल्ली विश्वविद्यालय, एनसीईआरटी, और सीसीआरटी जैसे राष्ट्रीय महत्व के विभिन्न संस्थानों और विश्वविद्यालयों में अपने समर्पित शिक्षण द्वारा तथा पूरे भारत में कार्यशालाओं का आयोजन करके हमारे पारंपरिक संगीत थिएटर में हमारी युवा पीढ़ी को शिक्षित करने में बड़ा योगदान दिया है।

5. पंडित रामदयाल को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। नौटंकी के क्षेत्र में उनके योगदान हेतु उन्हें वरिष्ठ संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया। 1980 के दशक की शुरुआत में उनकी संगीत रचना "कल्पना" को सोफिया बुल्गारिया में यूनिसेफ पुरस्कार के लिए भारत की प्रविष्टि के रूप में चुना गया था। उन्हें कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय-बर्कले, टेक्सास विश्वविद्यालय-ऑस्टिन, कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी, ओहियो विश्वविद्यालय, और काउंटर पल्स, सैन फ्रांसिस्को में नाटकों का प्रदर्शन करने और व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित करके अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया है।